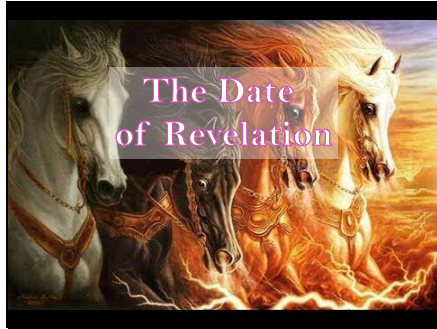


Slide 1



---

---

---

---

---

---

---

---

Slide 2



---

---

---

---


---

---

---

---

Slide 3



Philip Schaff

*"The literature of the Apocalypse, especially in English, is immense, but mostly IMPOSITORY rather than EXPOSITORY, and hence worthless or even mischievous, because confounding and misleading."*

---

---

---

---

---

---

---

---

Slide 4

**Kenneth Gentry**

"Most of the interest in Revelation today seems based on a radical misunderstanding of the very nature and purpose of the book. And much of this misapprehension is traceable to confusion regarding its original date of writing."

*Before Jerusalem Fell*

---

---

---

---

---

---

---

---

Slide 5

A horizontal timeline with a vertical pink line at AD 70. To the left of the line is the text "Jerusalem Destroyed". To the right of the line is a tilted box containing "AD 96" and a small image of the book cover for "The Book of Revelation".

---

---

---

---

---

---

---

---

Slide 6

A horizontal timeline with a vertical pink line at AD 70. To the left of the line is a tilted box containing "AD 67-68" and a small image of the book cover for "The Book of Revelation". To the right of the line is the text "Jerusalem Destroyed".

---

---

---

---



Slide 7



---

---

---

---

---

---

---

---

Slide 8



---

---

---

---

---

---

---

---

Slide 9




---

---

---

---

---

---

---

---

Slide 10




---

---

---

---

---

---

---

---

Slide 11




---

---

---

---

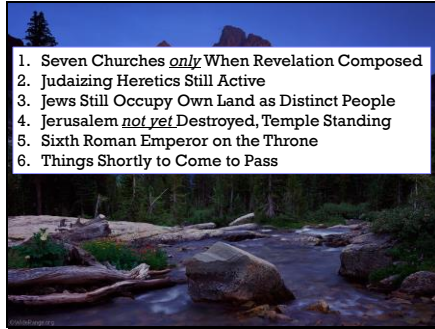
---

---

---

---

Slide 12



---

---

---

---

---

---

---

---

Slide 13



---

---

---

---

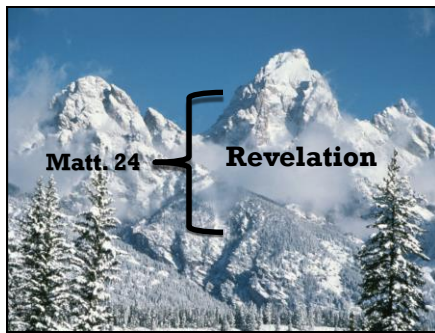
---

---

---

---

Slide 14



---

---

---

---

---

---

---

---

Slide 15

**Sir Isaac Newton**

"The folly of interpreters has been, to foretell times and things by this prophecy, as if God designed to make them Prophets. By this rashness they have not only exposed themselves, but brought the prophecy into contempt. The design of God was much otherwise. He gave this and the prophecies of the OT, not to gratify men's curiosities by enabling them to foreknow things, but that after they were fulfilled they might be interpreted by the event, and His own Providence, ... For the event of things predicted many ages before, will then be a convincing argument that the world is governed by Providence."

---

---

---

---

---

---

---